

8. वादों का साधन्य :- आधुनिक काल में साहित्यिक रचनाएँ वादों के आधार पर सज्जित की गयीं। हर वाद का अलग-अलग साहित्यिक रूप था। विविध विद्याओं द्वारा भी वाद संचालित किये गये। छायावाद, रहस्यवाद, अभिव्यंजकवाद, स्वच्छंदतावाद, पलायनवाद, हालावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, प्लोडवाद, अस्तित्ववाद, नयेनवाद या उपद्रववाद आदि इस काल में परिहृत वाद हुए।

9. आंग्ल प्रभाव :- इस काल के साहित्य में आंग्ल प्रभाव भी विशेषरूप से पड़ा। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमारा संपर्क अंग्रेजी साहित्य के साथ बढ़ गया। कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, रेखा-चित्र, स्मरणालम्बक गद्य आदि में पाश्चात्य शैलियों का प्रयोग हुआ। पद्य रचना में भी अंग्रेजी छंदों और अलंकारों का प्रयोग इस साहित्य में हुआ।

10. साधारण विषय :- द्वितीय साहित्य के आधुनिक काल में साधारण-से साधारण विषयों से भी काल्य में स्थान दिया गया। विधवा विवाह, गौरक्षा, कृषि, लष्कर, कदना, मिस्वारी, मिल कामों पर सिगरेट का टुकड़ा, उठुरमुता, रेल का इंजन, नीम का पेड़, बहारों का नाच, आँसू, मजदूर शिक्षा आदि साधारण विषय पर भी साहित्यिक रचनाएँ हुईं।